नारी कम मत मानियो, गुण दोष की खान । (गुणदोषसह— स्त्री)
बलिहारी माँ बहनपर, महिमा करू बखान ।। १ ।।
घर की शोभा नार है, बेटी बनकर आय । (बहुँ — बेटी)
बहुँ बन जावत सासीरये, दोऊँ घर चमकाय ।। २।।
सब कुछ सहकर माँ बने, ममता उमडत जाय । (माँ—भेदभाव रहीत)
बेटा बेटी भेद नही, सब को गले लगाय ।। ३।।
अबहु न अनपढ रह सकें, दो आखर पढ जाय। (साक्षर—स्वावलंबी)
घर बाहर की दुनियाँ मे, सब संग वो तर जाय ।। ४ ।।
लक्ष्मीबाई सी बनकर, बचुअन पिठ बंधाय (शुर—जिम्मेदार)
घर बाहर का काम कर, सारा बोझ उठाय ।। ५ ।।
सीता सी पतिपुजा करे, रावण दूर भगाय । (पतिव्रता,ईर्षा)
कैकैसी इर्षा करके, स्वार्थभाव अपनाय ।। ६।।
लाज रखे वह पिहरकी, सब सुख त्यागकर जाय । (त्याग,सहनशीलता)
मालदार की बेटी भी, सुखी रोटी खाय ।। ७।।
सावित्री सम सति बने, प्राण प्रियाके लाय । (सेवाभावी)
सौ डॉक्टर पर भारी है, सेवा में जुट जाय ।। ८ ।।
चाहे वह दिव्यांग हो, फिर भी ना घबराय । (गिर्यारोहक,सैनिक)
परबत लाँघन वो चली, सरपर कफन बँधाय ।। ९।।
आसमाँन मे उडती है, रेल — गाडी चलाय । (पायलट—ड्रायव्हर)
स्नेह की भुखी नार है, सबपर प्रेम लुटाय ।। १० ।।
राजपाट का काम भी, नारी सरस चलाय । (राज्यकर्ता)
घरकी लाज संभालकर, देस की शान बढाय ।। ११।।
सब के संग चलत रही, सब का करे विकास । (समाजसुधारक)
खुद सुधरी, दुनियाँ सुधरे, और न दुजी आस ।। १२ ।।

स्पर्धक का नाम : सौ.शाल्मली गौरव बिर्ला
पी.सी.एम.सी. थेरगाव ,
जिल्हा : पुना — ४११०३३ (महाराष्ट्र)
मो.नं. : [redacted] / ८८०६२३१९५३
9823773886

Scanned by CamScanner